Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ



महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में दलित जीवन एवं स्त्री चेतना की अभिव्यक्ति का अध्ययन

Pooja Kumari
Research Scholar, Jayoti Vidyapeeth Women's University, Jaipur, Rajasthan
Dr. Anand Rai
Research Supervisor, Jayoti Vidyapeeth Women's University, Jaipur, Rajasthan

सारांश

हिंदी साहित्य समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों का प्रतिबिंब रहा है। साहित्य के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों के जीवन, संघर्षों, समस्याओं एवं अनुभवों को अभिव्यक्ति प्राप्त होती रही है। भारतीय समाज में जातिगत असमानता, सामाजिक भेदभाव, आर्थिक विषमता तथा पितृसत्तात्मक व्यवस्था लंबे समय से विद्यमान रही हैं। इन व्यवस्थाओं का सबसे अधिक प्रभाव समाज के वंचित एवं शोषित वर्गों पर पड़ा है। विशेष रूप से दलित महिलाओं को जाति एवं लिंग के आधार पर दोहरे शोषण और भेदभाव का सामना करना पड़ा है। उनकी सामाजिक स्थिति, आर्थिक निर्भरता, शिक्षा से वंचित रहना, पारिवारिक असमानता तथा सामाजिक उपेक्षा जैसी समस्याएँ साहित्य के महत्त्वपूर्ण विषय रहे हैं। हिंदी की महिला उपन्यासकारों ने इन परिस्थितियों को अपने उपन्यासों में स्थान देकर दलित स्त्री जीवन के विविध पक्षों को अभिव्यक्त किया है। महिला उपन्यासकारों के साहित्य में स्त्री जीवन की समस्याओं, सामाजिक असमानताओं, पारिवारिक संबंधों, आर्थिक निर्भरता तथा आत्मनिर्भरता के प्रश्नों को विशेष महत्त्व प्राप्त हुआ है। महिला लेखिकाओं ने स्त्री को केवल परिवार एवं समाज की परंपरागत भूमिका तक सीमित न रखते हुए एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया है। उनके उपन्यासों में स्त्री की इच्छाओं, आकांक्षाओं, अधिकारों, संघर्षों तथा आत्मसम्मान की भावना को प्रमुखता से अभिव्यक्त किया गया है। जब यह अभिव्यक्ति दलित स्त्री जीवन से जुड़ती है, तब इसमें जातिगत उत्पीड़न, वर्गीय असमानता और लैंगिक भेदभाव के अनेक जटिल रूप सामने आते हैं। इस प्रकार महिला उपन्यासकारों का साहित्य दलित स्त्री की सामाजिक स्थिति एवं उसके संघर्षों को समझने का महत्त्वपूर्ण माध्यम बनता है।

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

मुख्यशब्द- महिला उपन्यासकार, दलित जीवन, स्त्री चेतना, दलित स्त्री विमर्श, जातिगत भेदभाव, लैंगिक असमानता, सामाजिक शोषण, पितृसत्तात्मक व्यवस्था, महिला सशक्तीकरण, सामाजिक अस्मिता।

प्रस्तावना

दलित जीवन का प्रश्न भारतीय समाज की सामाजिक संरचना एवं जाति व्यवस्था से गहराई से जुड़ा हुआ है। परंपरागत सामाजिक व्यवस्था में दलित समुदाय को लंबे समय तक सामाजिक सम्मान, शिक्षा, आर्थिक अवसरों तथा समान अधिकारों से वंचित रखा गया। दलित महिलाओं की स्थिति इस संदर्भ में और भी जटिल रही है, क्योंकि उन्हें जातिगत भेदभाव के साथ-साथ लैंगिक असमानता एवं आर्थिक शोषण का भी सामना करना पड़ा। उनके जीवन में गरीबी, अशिक्षा, घरेलू हिंसा, सामाजिक उपेक्षा, श्रम का शोषण तथा निर्णय लेने की सीमित स्वतंत्रता जैसी समस्याएँ देखने को मिलती हैं। महिला उपन्यासकारों ने इन समस्याओं को अपने साहित्य में चित्रित करके समाज की वास्तविक परिस्थितियों को उजागर करने का प्रयास किया है।

हिंदी महिला उपन्यासकारों ने दलित जीवन के चित्रण में सामाजिक यथार्थ को विशेष महत्त्व दिया है। उनके उपन्यासों में दलित स्त्रियों के दैनिक जीवन, पारिवारिक परिस्थितियों, सामाजिक संबंधों, श्रम, आर्थिक संघर्ष तथा सम्मानपूर्ण जीवन की आकांक्षाओं को अभिव्यक्ति मिलती है। इन रचनाओं में दलित स्त्री केवल शोषण एवं उत्पीड़न सहने वाली पात्र के रूप में प्रस्तुत नहीं होती, बल्कि वह अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने वाली, अपने अधिकारों के प्रति जागरूक तथा सामाजिक परिवर्तन की आकांक्षा रखने वाली महिला के रूप में भी सामने आती है। इस प्रकार उपन्यासों में दलित स्त्री का व्यक्तित्व संघर्षशील, आत्मनिर्भर एवं चेतनशील रूप में विकसित होता दिखाई देता है।

स्त्री चेतना का संबंध महिलाओं में अपने अधिकारों, स्वतंत्रता, समानता, आत्मसम्मान एवं सामाजिक पहचान के प्रति जागरूकता से है। यह चेतना महिलाओं को सामाजिक रूढ़ियों, परंपरागत बंधनों तथा भेदभावपूर्ण व्यवस्थाओं के विरुद्ध विचार करने और संघर्ष करने की प्रेरणा प्रदान करती है। दलित स्त्री चेतना का स्वरूप सामान्य स्त्री चेतना से कुछ भिन्न एवं व्यापक है, क्योंकि इसमें जातिगत शोषण, सामाजिक बहिष्कार, आर्थिक असमानता तथा पितृसत्तात्मक नियंत्रण के विरुद्ध संघर्ष भी सम्मिलित होता है। महिला उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों के माध्यम से इस चेतना को विभिन्न पात्रों, घटनाओं, संवादों एवं परिस्थितियों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में दलित स्त्रियों की शिक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता, पारिवारिक अधिकार, सामाजिक सहभागिता तथा निर्णय लेने की क्षमता से संबंधित विषय भी महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त करते हैं। शिक्षा को स्त्री चेतना एवं सामाजिक परिवर्तन का प्रमुख आधार माना गया है। शिक्षित एवं जागरूक महिला

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

अपने अधिकारों को समझने, अन्याय का विरोध करने तथा सामाजिक जीवन में अपनी स्वतंत्र पहचान स्थापित करने में सक्षम होती है। इसी प्रकार आर्थिक आत्मनिर्भरता महिलाओं को पारिवारिक एवं सामाजिक निर्भरता से मुक्त होकर सम्मानपूर्ण जीवन जीने की दिशा प्रदान करती है। उपन्यासों में इन पक्षों के चित्रण से महिला सशक्तीकरण की अवधारणा को साहित्यिक आधार प्राप्त होता है।

इस विषय का एक अन्य महत्त्वपूर्ण पक्ष दलित स्त्री के सामाजिक एवं सांस्कृतिक अस्तित्व से संबंधित है। दलित महिलाओं की पहचान केवल उनकी जाति अथवा लिंग तक सीमित नहीं होती, बल्कि उनके जीवनानुभवों, श्रम, संघर्ष, सामाजिक संबंधों तथा सांस्कृतिक परिवेश से भी निर्मित होती है। महिला उपन्यासकारों ने इन पक्षों को प्रस्तुत करके दलित स्त्री की अस्मिता एवं व्यक्तित्व के विविध आयामों को सामने लाने का प्रयास किया है। उनके साहित्य में सामाजिक अन्याय के विरुद्ध प्रतिरोध, आत्मसम्मान की भावना, समानता की माँग तथा मानवीय गरिमा की स्थापना जैसे विचार प्रमुखता से दिखाई देते हैं।

साहित्यिक दृष्टि से भी महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में दलित जीवन एवं स्त्री चेतना का अध्ययन महत्त्वपूर्ण है। उपन्यासों की कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, संवाद, भाषा, शैली तथा शिल्प के माध्यम से दलित स्त्री जीवन की वास्तविकताओं को प्रभावशाली अभिव्यक्ति प्राप्त होती है। लेखिकाएँ विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों एवं पात्रों के माध्यम से स्त्री के आंतरिक संघर्ष, मानसिक स्थिति, भावनात्मक अनुभवों तथा सामाजिक प्रतिरोध को प्रस्तुत करती हैं। इससे हिंदी उपन्यास साहित्य में स्त्री दृष्टिकोण एवं सामाजिक संवेदनशीलता का विस्तार होता है।

महाभोज (मन्नू भण्डारी)

हिन्दी में महिला लेखिकाओं के उपन्यास में दलित चिंतन की अभिव्यक्ति सर्वप्रथम मन्नू भण्डारी के चर्चित उपन्यास 'महाभोज' में हुई। प्रस्तुत उपन्यास दलित विमर्श की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है। सन् 1976 की महत्वपूर्ण घटना बेलछी हत्याकाण्ड को आधार बनाकर 'महाभोज' की रचना हुई जिसमें हरिजन टोले में आग लगा दी जाती है। 'महाभोज' उपन्यास के कवर पृष्ठ पर ही प्रकाशक ने लिखा है कि गरीब खेतिहर मजदूर और गाँव की निवासी अधिकांश जनता के निर्मम शोषण पर तुली, राजनीति के दोगले अगुओं उनके, पिठुओं और चमचों का एकदम निरावरण चित्रण हुआ है। विश्वास से कहा जा सकता है कि देश के अभावग्रस्त वर्गों को सदा से त्रस्त करते आये घिनौने आतंक से परदा उठाने वाला यह पहला साहस पूर्ण उपन्यास है।

'महाभोज' राजनीतिज्ञों के आन्तरिक व वा स्वरूप को दिखाते हुये अपने निजी स्वार्थ के लिये अपनाये जा रहे

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

हथकण्डों का भी दस्तावेज प्रस्तुत करता है। दलीय राजनीति में सभी अपने-अपने दल को बहुमत दिलाने के लिये किस प्रकार समाज में हो रही घटनाओं एवं राजनैतिक लाभ के लिए सामाजिक उत्पीड़न से हो रहे लाभ से अपना उल्लू सीधा करने में लगे हैं। 'महाभोज' उपन्यास राजनीतिक दिखावे की भी परत दर परत खोलकर राजनेताओं की परदे के पीछे की तस्वीर को उजागर करता है। आजादी के बाद वैसे तो दलितों की स्थिति में सुधार के लिए कई नियम कानून लागू किये गये किन्तु उनकी स्थिति में किसी भी प्रकार का सुधार नहीं आया। राजनीति के मैदान में महत्वपूर्ण वोट बैंक के रूप में उनकी महत्ता अवश्य थी। यही कारण है कि सरोह गाँव में जोराव सिंह द्वारा जब हरिजन के टोले में आग लगा दी जाती है तो मंत्रियों व नेताओं की गाड़ियों की लम्बी कतार लग जाती है। कारण यह नहीं कि उन्हें हरिजनों के मौत का दुख या तकलीफ है बल्कि यह कि उन्हें विरोधी पार्टी को सत्तारूढ़ पार्टी को नीचा दिखाने का सुअवसर मिल गया। उनका एकमात्र उद्देश्य है एक ही घटना का सही या झूठ साबित करके अपने दल का हित साध सके। और दूसरे पर किस प्रकार दोषारोपण कर सके। दलितों की जिन्दगी उनके लिये इतनी मायने नहीं रखती जितनी उनकी कुर्सी। इस अग्निकॉड में आदमियों व जानवरों को एक साथ भून दिया गया। विधानसभा में हंगामा मचा विरोधी दल ने इस सुअवसर को हाथ से जाने नहीं दिया और मुख्यमंत्री के त्यागपत्र तक की मांग की गई। परन्तु मुख्यमंत्री के लिए भी एक तरह से अच्छा मौका मिल गया था उन्होंने आगजनी की इन्कायरी के लिये हुक्म दिये। हरिजनों के लिए नयी बस्ती की योजना बनी। नयी बस्ती में जिन हरिजनों को दाखिला मिला वे मरने वालों की स्मृतियों को धीरे-धीरे भूल गये। त्यागपत्र की बात तो दूर रही सत्ताधारी दल के कदम और भी मजबूत हो गये। इस घटना के लगभग एक महीने बाद सरोहा गाँव के ही हरिजन बस्ती के एक आदमी विसेसर की हत्या कर दी जाती है। वह हरिजन युवक होते हुए भी एक सामान्य व्यक्ति ही हैं विसू पढ़ा लिखा है, साथ ही अपने अधिकारों के प्रति सचेत भी है एक तरह से वह सामान्य जन दलित, हरिजन मजदूर आदि की आशाओं का और उम्मीदों को जीवित रहने के लिए न्याय का प्रतीक है। विसेसर दलित चेतना सम्पन्न युवक है। वह यह जानता है कि मजदूरों, किसानों को कम मजदूरी और अधिक ब्याज लेकर साहूकार एवं जमींदार लूटते हैं उनका शोषण करते हैं वह मजदूरों व किसानों को सरकारी नियम कानून तथा उनके अधिकारों आदि के बारे में बताकर काम बन्द करा देता है। सक्सेना को विसू का पिता यह बतलाता है कि "ऊ सरकार खेत पै काम करे वाले मजदूर को कहत रहा कि इत्ती कम मजदूरी पै काम ना करो। मजदूरी बढ़ावै खातिर लड़ी। "

कठगुलाब (मृदुला गर्ग)

दलित चेतना की दृष्टि से मृदुला गर्ग का 'कठगुलाब' उपन्यास एक उल्लेखनीय कृति है। प्रस्तुत उपन्यास में वैसे तो कई स्त्री पात्र है उनमें से दलित स्त्री पात्रा नर्मदा का चरित्र बहुत महत्वपूर्ण है। वैसे तो समाज में

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

दलित स्त्रियाँ तिहरे शोषण का शिकार होती है। जबकि पुरुष दोहरा दमन झेलते हैं- आर्थिक शोषण और भारतीय जाति व्यवस्था में कथित निम्न जाति होने का सामाजिक दमन, जो कई बार हिन्दू धार्मिक नियमों के अनुसार अश्पृश्यता तक चला जाता है। दलित स्त्रियों को ये दोनों दमन तो दलित पुरुषों के साथ ही झेलने पड़ते है। सामंती मूल्य व्यवस्था के चलते वे घरों के भीतर पुरुष दमन का भी शिकार होती हैं। दलित पुरुष भी अपने घरों के भीतर व सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना में स्त्रियों को दोयम दर्जा देते है। ठीक उसी तरह 'कठगुलाब' की दलित स्त्री पात्र नर्मदा भी इसी शोषण व अत्याचार का शिकार होती है। "कठगुलाब में परिवार से उखड़े हुए लोग हैं अपितु वे परिवारहीन, खण्डित और अकेले है। व्यक्ति निर्माण या व्यक्तित्व निर्माण की प्रथम पाठशाला परिवार होता है लेकिन माता-पिता की छत्र-छाया हट जाय तो किसी भी बच्चे की दिशा ही बदल जाती है इसी दुर्भाग्य और विडम्बना की शिकार नर्मदा भी होती है। "कम उम्र में ही माँ-बाप के न होन पर उसे अपनी दीदी जीजा के परिवार के साथ ही रहना पड़ता है। नर्मदा का जीजा अपनी पत्नी को प्रताड़ित करता ही था, उसकी बहन नर्मदा का भी शोषण करता था, वह सुबह-शाम उनपर हाथ चलाता, पिटायी करता और कभी-कभी तो उन दोनों को घर के बाहर निकाल देता था। उसका जीजा शारीरिक, मानसिक व आर्थिक सभी प्रकार से उन्हें कष्ट पहुँचाता। एक दिन नर्मदा के बीमार हो जाने पर जब कारखाने के मालिक ने उसे निकाल दिया तो उसने अपना पेट पालने के लिए कोठियों में घर का काम करना शुरू कर दिया। दलित वर्ग में जन्म लेना मानो उसके जीवन का सबसे बड़ा अपमान हो अपने इस निम्न जाति में जन्म लेने के कारण उसे कई बार शोषण का शिकार होना पड़ता किन्तु नर्मदा कभी भी कमजोर नहीं पड़ी उसने अपना काम नहीं छोड़ा अपना धैर्य बनाये रखा।

अल्मा कबूतरी (मैत्रेयी पुष्पा)

अंतिम दशक में प्रकाशित मैत्रेयी पुष्पा का उपन्यास 'अल्मा कबूतरी' भी बुन्देलखण्ड के एक जयरामपेशा जाति कबूतरा पर लिखा गया है। दलित जीवन की त्रासदी का यथार्थ चित्रण भी इस उपन्यास में हुआ है। भारत देश में ऐसी कई जनजातियाँ है जो आजादी का मतलब ही नहीं जानती है उनके पास न तो जमीन है और न ही सिर छिपाने का घर । शासन व्यवस्था ने इस जनजातियों 'जयरामपेशा' जाति घोषित करके सिर्फ सभ्य समाज की नजरों में ही उपेक्षा का पात्र नहीं बना दिया बल्कि पुलिस के अत्याचार का भी मुलायम चारा बना दिया। देश की स्वतंत्रता के बाद इन जातियों को समान नागरिकता का अधिकार मिला, पर जीविकोपार्जन का कोई स्थिर व सम्मानजनक साधन प्राप्त नहीं हुआ जिसके कारण कबूतरा जाति के पुरुष अपराध धर्म में लिप्त हो गये, और स्त्रियाँ देह व्यापार के लिए मजबूर हो गयी। भारत में इतने वर्षों की आजादी ने भी इनकी नयी पीढ़ी को सम्मानजनक जीवन का कोई जरिया नही सुझाया। कबूतरा जाति सैकड़ों वर्षों से सभ्य समाज के हाशिये पर जिन्दगी गुजार रही है। वास्तव में यह एक दलित जाति है। जिसकी पीड़ा

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

भरी जिन्दगी के विषय में कहा जाता है कि "कबूतरा पुरुष या तो जंगल में रहता है या जेल में ... स्त्रियाँ शराब की भट्ठियों पर या हमारे बिस्तरों पर।" इसी अपराधी कबीले के कज्जाओं द्वारा शोषण तथा उनमें पैदा होती चेतना को मैत्रेयी पुष्पा ने भी उपन्यास के कथानक का आधार बनाया है। यह भड़ोरा खुर्द के कबूतरा बस्ती की कथा है। कबूतराओं का इतिहास बताते हुए लेखिका ने इन्हे झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का सिपाही कहा है जो पिछले 150 वर्षों से इस भड़ोराखुर्द में बसकर दारू पिलाने का कार्य कर रहे है। समाज से बहिष्कृत इन जातियों का मुख्य धंधा चोरी, डकैती, लूट एवं हत्या है। कहा जाता है कि "बहेलिया जिस प्रकार से चिड़िया फँसाता है ठीक उसी तरह से दौलत वाले गरीबों को फँसाते हैं। " इसी प्रकार से अल्मा कबूतरी के शोषण की भी कहानी प्रारम्भ हो जाती है।

भड़ोराखुर्द के एक किसान मंसाराम के दो बीधे जमीन पर कबूतराओं का राज है यह बात उसे बर्दाश्त नहीं होती। इसी कारण वह तिलमिलाकर अत्याचार व शोषण करता था। छोटी-छोटी गलतियों पर ही हाथ उठा लेता था। दरअसल नीची जाति के लोगों की यह सबसे बड़ी विडम्बना रही है कि उसके छोटे अपराध भी बड़े होते हैं। सभ्य समाज के लोग इन्हें दबाकर डरा- धमकाकर रखने में ही अपना शान समझते हैं। अमरकांत ने अपनी कहानी 'जिन्दगी' और 'जोंक' में बिना गलती के रजुआ को मारने वाले सभ्य समाज के मुँह से यह कहलवाकर कि 'नीबू' और 'नीच' को जितना निचोड़ा जाए उतना हीही रसरस निकलता है। इस सच को और गहराई दी है। उच्च वर्ग के लोगों के हृदय में जिस प्रकार दलितों के प्रति कोई सहानुभूति नहीं रहती है ठीक उसी प्रकार उनकी दृष्टि में दलितों की स्त्रियों की कोई इज्जत आबरू नहीं है। दलित स्त्रियों के इज्जत से खिलवाड़ व उनका अपमान करना अपना अधिकार समझते है ये दलित स्त्रियाँ मानो उनकी हमबिस्तर बनाने के लिए ही जान पड़ती हैं मंशाराम भी कबूतरा जंगलियों की पली कदम पर हर वक्त बुरी नजर रखता है। एक बार मंशाराम एक षड्यन्त्र के तहत कबूतरा जंगलियाँ को लल्लूराजा के यहाँ चोरी कराता है। लेकिन लल्लू राजा अपने घर पर हुई चोरी का इल्जाम अपने चाचा पर लगाकर उसकी सारी जायदाद हड़प लेता है और उसकी हत्या भी करा देता है जिसका सारा इल्जाम जंगलियाँ पर आता है।

इदन्नमम (मैत्रेयी पुष्पा)

मैत्रेयी पुष्पा का नाम एक अन्य उपन्यास "इदन्नमम " में भी किसानों से मजदूर हुये दलित की समस्याओं को चित्रित किया गया है। तथा साथ ही महिला मुक्ति या स्वतंत्रता के विचार और खरी सृजनात्मक का जैसा बढ़िया द्वन्द्व मैत्रेयी पुष्पा के "इदन्नमम" में है वैसा शायद ही उनके किसी उपन्यास में हो। एक प्रकार से यह उपन्यास स्त्री चेतना की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, किन्तु यहाँ पर मजदूरों की विवशता गरीबी एवं लाचारी का चित्रण संवेदनपूर्ण एवं मार्मिक ढंग से किया गया है सांस्कृतिक गुलामी की यह परम्परा निम्न वर्ग की

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

मानसिकता में इतनी गहरी रिस गयी है कि इसे निकालकर गुलामी की सही शत्रु की असंभव तो नहीं कठिन जरूर है। शत्रु की पहचान करवाना उपन्यास की जो नायिका मंदा है वह सचमुच स्त्री संघर्ष का प्रतीक लगती है और उसका चरित्र बड़े धीरज और ईमानदारी से बुना गया है। और इसके साथ-साथ गाँव का परिवेश भी बड़े ही सहजभाव से चला आता है। मंदा गांव के दलित मजदूरों एवं किसानों को ठेकेदारों एवं क्रेशर मालिकों की गुलामी से मुक्त कराने के लिए जेहाद छेड़ती है उनकी हर संभव मदद करती है। दलित वर्ग की स्त्री की हालत बहुत ही खराब होती है जहाँ एक ओर गरीबी की मार सहती है तो वही दूसरी ओर सवर्णों द्वारा यौन शोषण का भी शिकार होती है मंदा को भी इससे जूझना व संघर्ष करना पड़ता है किन्तु मंदा समाज द्वारा स्त्री के लिए निर्मित बन्धनों को तोड़ती है और साथ ही उस शोषण के विरूद्ध भी आवाज उठाती है जो आज के भ्रष्ट नेताओं और माफिया ठेकेदारों द्वारा आदिवासियों व निम्नवर्गीय पर कहर ढाता है। पूरे उपन्यास में मंदा का विरोध स्वस्थ और सकारात्मक है। मंदाकिनी एक ऐसी पात्र है जो पुरूष के आश्रय से रहित एवं घर परिवार के मोह और बंधन को छोड़कर अपना एक अलग और स्वतंत्र संसार बसाती है। मंदा की माँ प्रेम अपने पति की मृत्यु के पश्चात् पुनः विवाह की अनुमति न मिलने पर और इसका विरोध करने पर अपनी पुत्री को छोड़कर चली जाती है। उसकी जमीन पर रतन सिंह कब्जा कर लेता है। प्रेम (माँ) अपनी पुत्री मंदा को पाने के लिए कोर्ट में अपील करती है। बऊ (दादी) अपनी विधवा बहू प्रेम के दावे का जबाव देने के लिए सोनपुरा छोड़कर श्यामली गाँव में आ जाती है। विधवा प्रेम समाज की रूढ़ियों, परम्पराओं को त्यागकर अपने प्रेमी रतन यादव के साथ घर बसाने के लिए चली जाती है। बऊ को यही दुख है कि "विधवापन के बनाए गए जिन निषेधों को सहती झेलती रही, प्रेम ने उन्हें नकार दिया " रतन यादव के डर से मंदा को कुसुम भाभी के साथ बिरगवा भेज दिया जाता है और वह स्कूल मास्टर कैलाश मामा द्वारा मन्दा का बलात्कार होता है। इस भयानक घटना ने कम उम्र की मंदा को कमजोर कर दिया और वह स्वयं को अपराधी मान बैठी। थोड़ी बड़ी होने पर वह मकरन्द से उसकी सगाई होती है, दोनों के बीच भावनात्मक रिश्ता बनता है। प्रेमा द्वारा कोर्ट में अर्जी वापस लेने पर वह अपने गाँव सोनपुरा वापस आ जाती है। सोनपुर आकर मंदा का वास्तविक संघर्ष शुरू होता है। सोनपुरा आने पर उसे ज्ञात होता है कि उसकी जमीन पर धोखे से दूसरे लोगों ने कब्जा कर लिया है। मंदा बचपन से अपने पिता की इच्छा पूरा करना चाहती है वह सोनपुरा में डॉक्टर, दवाइयों की उचित व्यवस्था कराना चाहती थी। सोनपुरा में डॉक्टरों की नियुक्ति एवं अस्पताल की व्यवस्था के लिए अर्जी देती है और प्रतिदिन सरकारी दफ्तरों के चक्कर लगाती है। इसी बीच पहाड़ों पर क्रैशर का काम करने के लिए बाहर से मजदूर बुलाये जाते हैं। उसके गाँव के मजदूर अपनी ही जमीन पर किसान तो दूर मजदूर भी नहीं रह जाते। मंदा इस तरह के अन्याय से ग्रस्त हो जाती है और इसके लिए आवाज उठाती है। वह अभिलाख सिंह जैसे व्यापारी से लड़ाई लेने का संकल्प लेती है। उसने वहीं बैठे-बैठे संकल्प उठाया। मुझे तो किसी सरकार से भी नहीं लड़ना, किसी राजतन्त्र का विरोध नहीं, चंद व्यापारियों

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

के विरूद्ध तो आवाज उठानी है।

आवां (चित्रामुद्गल)

'व्यास सम्मान' से पुरस्कृत वृहद आकार वाले प्रस्तुत उपन्यास 'आवा' में सुप्रसिद्ध लेखिका चित्रा मुद्गल ने औरतों के दुखःदर्द और नारी मुक्ति के सवालों को ही उपन्यास का केन्द्रीय विषय बनाया है। औपन्यासिक कथा की दो धाराएँ हैं- एक मजदूर जगत चाली में रहने वाले, कामगार अघाड़ी में कार्यरत मजदूर नेताओं के छल-छद्म को झेलते, सहते मजदूर मर्द है और दोहरे स्तर पर उत्पीड़न का शिकार होती किशोरी बाई, सुनंदा और अनीसा जैसी औरतें हैं। तथा दूसरी दुनिया अमीरों, पूँजीपतियों की है जिसका देश-विदेश में फैला लम्बा चौड़ा व्यवसाय है। इस वृहद उपन्यास 'आवां' के सम्बन्ध में श्री बलराम जी विचार करते हुए इसे 'स्त्री विमर्श का महाआख्यान' कहा है उनका मानना है कि सम्पूर्ण स्त्री विमर्श से भी कहीं ज्यादा, श्रमिकों के जीवन और श्रमिक राजनीति के ढेर सारे, उजले काले कारनामों तक फैले हुए है...दलित जीवन और दलित विमर्श के भी कई कथानक अनायास आए है। इस रूप में इसे आज के स्त्री-विमर्श के साथ-साथ दलित-विमर्श का भी महाकाव्य कह सकते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में दलित मजदूर कार्यकर्ता पवार के माध्यम से दलित जीवन के कई कटु सत्यों को उद्घाटित किया गया है। तेज तर्रार दलित युवक पवार, कामगार, अघाड़ी के अन्तर्विरोधों का आख्याता है। वह कहानी का एक तरह से सूत्रधार हैं। उसी के माध्यम से दलितों की दयनीयता और आक्रोश को बुलन्द किया गया है। प्राचीन काल से ही दलितों का मुख्य कार्य होता था सवर्णों की सेवा करना। लेखिका ने पवार के माध्यम से दलितों की दयनीय स्थिति पर प्रकाश डालते हुए लिखती है कि दलितों को दिनभर काम करने के बदले उन्हें नाम मात्र का पैसा देकर उन्हें बहला दिया जाता था। किसी को अपने पक्ष में बोलने का हक नहीं था, इन्हें गाँव के बाहर रहने और जो खाना दिया जाता था वह खाने योग्य न रहने पर भी खाने के लिए विवश किया जाता था। बचपन में पवार भी दाँत साफ करने के लिए नीम, बबूल का उपयोग नहीं कर सकता था क्योंकि गाँव के झाड़ झंखाड़ तक सवर्णों की ही मिल्कियत थे। उन सब पर दलितों का अधिकार नहीं के बराबर था। सवर्णों का मानना है कि दलित वर्ग अपने दाँत को घिसने के लिए सिर्फ मेड़ की मिट्टी का ही उपयोग कर सकते है। पवार के लिए यह अतीत इतना कटु था कि प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दमन का प्रतिरोध उसके रोम रोम मे ही समाया हुआ है। सरकारी एवं अर्द्धसरकारी संस्थाओं में कार्यरत कर्मचारी जो जनता की सेवा के लिए नियुक्त किये जाते हैं वे मजदूर वर्ग का शोषण किस अमानवीय ढंग से करते हैं उसका भी चित्रण इस उपन्यास में दृष्टिगोचर होता है। मजदूरों के पसीने की बदबू उनकी नाजुक बीबियों को असहनीय लगता है सरकारी अधिकारियों को अपने बंगला के आगे जाने वाली सड़कों से आना-जाना तक भी अच्छा

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

नहीं लगता है। 'आवां' मे श्रमिक जीवन श्रमिक आंदोलन और उनके अन्तविरोध का विस्तारपूर्वक अंकन है। लेखिका ने घाटकोपर से लेकर कांडुर मार्ग, भाडुप, मुलड तक फैली बस्तियों में रहने वाले मजदूरों की जिन्दगी का खुला और यथार्य चित्रण किया है। उनकी स्त्रियों व बाल-बच्चों की स्थिति अत्यन्त पीड़ादायी है अर्थात् वहाँ मनुष्य और सूअर में कोई अंतर नहीं है।

अन्नासाहब संगठन में पवार के बढ़ते वर्चस्व को पूरी तरह से नष्ट करने की फिराक में रहते है अन्नासाहब राजनीति से जुड़े रहने के कारण उसका गलत इस्तेमाल करते हैं उनकी दृष्टि सामन्ती और रीतिकालीन है उनका कथन है 'देह मुझे नहीं भोगती। भूले भटके मैं स्वयं ही अपनी दैहिक व मानसिक थकान मिटाने के लिए उसका उपयोग कर लेता हूँ और नई स्फूर्ति और नई उर्जा के साथ श्रमिक सेवा में संलग्न हो उठता हूँ। किन्तु पवार के व्यवहार में इस तरह का चारित्रिक स्खलन नहीं होता। वह नैतिक व कर्मनिष्ठ व्यक्ति है। किसी भी मामले में उसकी अलग दृष्टि है वह अन्नासाहब द्वारा अपने ऊपर हो रहे हर अत्याचार का विरोध करता है। पवार में स्त्री को लेकर अधिकारों के प्रति भी उसमें सक्रिय गतिशीलता दिखाई पड़ती है। कामगार अघाड़ी के क्रियाकलाप से निष्क्रिय होने और महत्वाकांक्षा खो देने के लिए अन्नासाहब ने नामिता को अघाड़ी में नौकरी देता है। क्योंकि अन्ना जानते थे कि पवार के मन में नामिता के प्रति लगाव है किन्तु पवार इन सब झंझटों से कोसों दूर रहता है। निःस्वार्थ नामित के पारिवारिक संकट को अपना दायित्व ही समझता है। नमिता के प्रति वह सदैव संवेदनशील रहता है सच्चे मित्र की भांति वह नमिता को अन्ना साहब के प्रति सावधान करता है। पवार के जरिए ही दलित व कामगार स्त्रियों के उत्पीड़न और संघर्षशीलता के विभिन्न पहलुओं में व्याख्यायित किया गया है वैसे अन्नासाहब दलित वर्ग से आये पवार को बढ़ावा देकर राजनीति में उसका भरपूर उपयोग करना चाहते हैं, लेकिन पवार अपनी चतुराई से इस षड्यंत्र से किसी भी तरह से बाहर निकल आता है। सवर्णों के प्रति पवार का मन क्षुब्ध है वह सदियों से सामाजिक अपमान व उत्पीड़न को अपनी नियति मानने से इंकार करते हुए दलितों में अपने अधिकारों के लिए लड़ने के लिए चेतना जगाने का भरसक प्रयास करता है।

अनारो (मंजुल भगत)

मंजुल भगत को इसी उपन्यास से अधिक प्रसिद्धि मिली। महिला लेखिकाओं ने अधिकतर मध्यवर्गीय या उच्च वर्गीय कथानक ही लिखे हैं। परन्तु मंजुल भगत ने चतुर्थ वर्ग की समस्याओं को, उनके रहन-सहन एवं उनमें आते परिवर्तन को उजागर करने के लिए इस उपन्यास की रचना की है। महानगरों में रहने वाली झुग्गी-झोपड़ियों के लोगों के संघर्ष को सहज एवं सरल भाषा शैली में प्रस्तुत किया गया है। इसी तरह का उपन्यास 'टपरेवाले' कृष्णा अग्निहोत्री का है, परन्तु उसमें छुआछूत और टपरे में रहने वाले कई परिवारों का चित्रण होने

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

से कथानक उलझा हुआ सा है। 'अनारो' में मुख्य पात्र अनारो है। उपन्यास कर पूरा कथानक उसी के इर्द-गिर्द सिमटा हुआ है। अनारो में संघर्षरत होकर भी जीने की जिजीविषा हैं वह साहस के साथ अपनी स्थितियों से जूझती है। उसमें स्वाभिमान है। अनावश्यक किसी का रौब उससे सहन नहीं होता है अनारो के माध्यम से लेखिका ने निम्नवर्ग में फैली हुई अधिकार चेतना का चित्रण किया है। श्रमिक वर्ग से विनीत भाव समाप्त हो रहा है। निम्न वर्ग के लोगों ने भी अपने अधिकारों के प्रति अपने आप को सचेत कर चुके हैं। घरेलू नौकर चाकर एवं घर-घर बर्तन मांजने वालियाँ अब अपना अपमान सहन नहीं कर सकती। अनारो भी देर होने पर कभी-कभी मालकिनों की डॉट सुन लेती है पर कभी-कभी विद्रोह कर जाती है। काम तक छोड़कर चल देती है। "तो रख लो, दूसरी, तीसरी,जितनी तुम्हारे महल में अटे उतनी । अनारो कोई भूखी नहीं मर रही तुम्हारे बिना । यह रखी तुम्हारी नौकरी ।" अनारो अपने अधिकारों के प्रति सतर्क है। पति द्वारा दूसरी स्त्री (रखैल) के घर मे लाने पर कोहराम मचा देती है उसको घर से निकालकर ही दम लेती है। परन्तु अपने कर्तव्य से भी चूकती नहीं है सौत के बच्चे को भी पालने के लिए तैयार है क्योंकि वह उसके पति का बच्चा है। अनारो निम्नवर्ग की होते हुए भी साहसी महिला है। लेखिका ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि उच्च या मध्यवर्गीय कामकाजी महिलाएँ ही अपने अधिकारों के प्रति सचेत नहीं हैं बल्कि निम्नवर्गीय कामकाजी महिलाएँ भी अपने अधिकारों के प्रति सर्तक है। उनमें भी प्रदर्शन प्रियता है। सामर्थ्य से बाहर जाकर खर्च करने की ललक है। अनारों घर-घर जाकर अपना और अपने बच्चों का पेट पालती है उसका पति निकम्मा है। कभी कोई आर्थिक सहायता नहीं करता है। किन्तु फिर भी गंजी (पुत्री) के विवाह पर अनारो खुले हाथ खर्च करती है। पर जब शांति और मनहर मन्दिर में चुपचाप शादी कर लेते हैं तो उसे बहुत दुख होता है और बाद में गंजी की ससुराल समेत पूरी बिरादरी का खाना करती है गंजी के बाप को चिट्ठी लिख कर बुलवाती है उसके ढ़ोंग को लेखिका ने एक अध्यापिका के माध्यम से इस प्रकार व्यक्त किया है- "देखो, मुझे ब्लड प्रेशर की बीमारी है और तुम्हारी बाते सुनकर और बढ़ जाती है यह निकम्मी रूढ़ियाँ दीमक की तरह तुम्हारे दिमागों को चाट चुकी हैं जर्जर, खुर-खुर हो गए हैं, पर इन कुरीतियों को नहीं छोड़ेंगे। " अनारो डेढ़ हजार का कर्जा लेकर अपनी झुग्गी में जश्न मनाती है जबकि उसके बेटी दामाद भी उसके खिलाफ है किन्तु विधिवत रस्में पूरी कर प्रशंसा सुनकर वह तृप्त हो जाती है लेखिका ने इस सामाजिक रूढ़ियों पर चोट की है डा. नीहार गीते ने इस पर अपना मत व्यक्त करते हुए कहा है- "सामाजिक रूढ़ियों का पालन कर अनारो खुश है लेकिन पौष्टिक आहार की कमी के कारण उसे एनीमिया हो गया है।

निष्कर्ष

महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में दलित जीवन एवं स्त्री चेतना की अभिव्यक्ति सामाजिक यथार्थ, मानवीय संवेदना तथा परिवर्तन की आकांक्षा से जुड़ी हुई है। इन उपन्यासों के माध्यम से दलित महिलाओं के

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

जीवन में व्याप्त जातिगत भेदभाव, लैंगिक असमानता, आर्थिक शोषण, सामाजिक उपेक्षा एवं पितृसत्तात्मक व्यवस्था की समस्याओं को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है। महिला उपन्यासकारों ने दलित स्त्रियों को केवल शोषित एवं पीड़ित पात्र के रूप में चित्रित नहीं किया है, बल्कि उन्हें संघर्षशील, जागरूक, आत्मसम्मान से परिपूर्ण तथा अपने अधिकारों के प्रति सजग व्यक्तित्व के रूप में भी प्रस्तुत किया है। इन रचनाओं में शिक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता, सामाजिक सहभागिता, स्वतंत्रता एवं समानता की आकांक्षा स्त्री चेतना के महत्त्वपूर्ण आधार के रूप में सामने आती है। साथ ही उपन्यासों में दलित स्त्री के व्यक्तिगत अनुभवों एवं सामूहिक संघर्षों के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था की विसंगतियों को उजागर किया गया है। इस प्रकार महिला उपन्यासकारों का साहित्य दलित स्त्री के जीवन, अस्मिता एवं अधिकारों को समझने का महत्त्वपूर्ण माध्यम है। हिंदी साहित्य में इन उपन्यासों का योगदान दलित स्त्री विमर्श को व्यापक बनाने तथा सामाजिक न्याय, मानवीय गरिमा एवं समानता की चेतना को सशक्त करने में महत्त्वपूर्ण सिद्ध होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. रामदरश मिश्र जल टूटता हुआ, पृष्ठ-225.

2. रामदरश मिश्र: जल टूटता हुआ, पृष्ठ-117-118.

3. वसुधा-58 अंक-जुलाई सितम्बर, पृष्ठ-165.

4. रामदरश मिश्र : जल टूटता हुआ, पृष्ठ-235.

5. हमेन्द्र पानेरी स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास मूल्य संक्रमण, पृष्ठ 218.

6. रामदरश मिश्र: जल टूटता हुआ, पृष्ठ-258-259.

7. डॉ० ज्ञान चन्द गुप्त : आंचलिक उपन्यास संवेदना और शिल्प, पृष्ठ-95.

8. नागार्जुन: सम्पूर्ण उपन्यास, (बलचनमा) पृष्ठ-65.

9. नागार्जुन : सम्पूर्ण उपन्यास, (बलचनमा), पृष्ठ-20.

10. नागार्जुन : सम्पूर्ण उपन्यास, (बलचनमा), पृष्ठ-138.

11. नागार्जुन सम्पूर्ण उपन्यास, (बलचनमा), पृष्ठ-150.

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

12. वसुधा: अंक 58, जुलाई-सितम्बर, पृष्ठ-158.

13. डॉ० सुषमा धवन: हिन्दी उपन्यास, पृष्ठ-303.

14. डॉ० सुशील कांत सिन्हा: हिन्दी के प्रगतिवादी उपन्यास, एक अध्यन, पृष्ठ-218.

15. वसुधा-58, अंक-जुलाई सितम्बर, पृष्ठ-172.

16. वसुधा-58, अंक-जुलाई सितम्बर, पृष्ठ-173.

17. गोपाल राय: प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यास भाग दो (धरती धन न अपना) पृष्ठ-101.

18. जगदीश चन्द्र: धरती धन न अपना, पृष्ठ-8.

19. जगदीश चन्द्र: धरती धन न अपना, पृष्ठ-35.

20. जगदीश चन्द्र: धरती धन न अपना, पृष्ठ-55.

21. डा० मुन्ना तिवारी : दलित चेतना और समकालीन हिन्दी उपन्यास, पृष्ठ-100.

***E-mail:* editor.jslsci888@gmail.com**